RESEARCH PAPER | Education | Volume : 5 | Issue : 9 | September 2015 | ISSN - 2249-555X

Sarkari vs Gair Sarkari Vidhyalayo ke kaksha Dhasavi ke Vidhyarthio ke Akramak vyavhar me ak Tulnatmak Adhyayan

सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों के कक्षा दसवीं के विद्यार्थियों के आक्रामक व्यवहार में एक तुलनात्मक अध्ययन

KEYWORDS

Dr.(Smt.)Nisha Shrivastava
HOD (Education Department), Ghanshyam Singh Arya Kanya Mahavidyalaya, Durg(C.G.)

Ku.Ruchi Yadav
Asst.Prof.Education Dept. Ghanshyam Singh Arya KanyaMahavidyalaya, Durg (C.G.)

Dugesh Nandini
(M.Ed. Student) Ghanshyam Singh Arya Kanya Mahavidyalaya, Durg(C.G.)

ABSTRACT प्रस्तुत शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों के कक्षा दसवीं के विद्यार्थियों की आक्रामक व्यवहार में एक तुलनात्मक अध्ययन करना है। विद्यार्थियों की आक्रामक व्यवहार मापने के लिए डॉ. जी.पी. माथुर और डॉ. राजकुमारी भटनागर के द्वारा निर्मित परीक्षण का उपयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन हेतु दुर्ग जिले के कक्षा दसवीं में अध्ययनरत् सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों के कुल 200 विद्यार्थियों (100 सरकारी विद्यालय तथा 100 गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों) का चयन किया गया है। चयनित विद्यार्थियों पर आक्रामक व्यवहार (*Aggression Scale*) के परीक्षण का प्रशासन करके उनके प्राप्तांक ज्ञात किये गये। परिकल्पनाओं के सत्यापन हेतु प्रपत्रों का सांख्यिकीय विश्लेषण मध्यमान, मानक विचलन तथा सार्थकता ज्ञात करने हेतु टी–परीक्षण प्रयोग किया गया। सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के आक्रामक व्यवहार के मध्य सार्थक अंतर पाया गया।

प्रस्तावना

वर्तमान समय में विद्यार्थियों के आक्रामक व्यवहार को लेकर चिंतन की समस्या उनके वातावरण में समायोजन का ना होना आक्रामकता का कारण बन गया है। जिसके परिणाम स्वरूप बालक का समाज विरोधी कार्य करना, हिंसा, दमन, अहम्, उग्रता, अपराध का जन्म होना देखा गया। माथुर, कुसुम, अल्का और सिन्हा एस.पी. (2002) के अध्ययन से ज्ञात होता है कि आक्रामकता के अति दण्डात्मक, दण्डगत एवं अखण्डात्मक दिशाओं, उच्च व निम्न स्वनावरण के विरोध दमन, अहम् प्रतिरक्षक व आवश्यकता स्थिति प्रतिक्रिया प्रारूप में सकारात्मक अंतर पाया गया। मोहन्ती (1998) ने अतिरक्षित बालकों के व्यवहार पर अध्ययन कर यह निष्कर्ष पाया कि ऐसे बालक जल्द ही चिड़चिड़ापन का शिकार होते हैं एवं अल्प उत्तेजना से आक्रामक हो जाते हैं। शोका फेल्ली (2001) ने शिक्षक एवं प्रशिक्षार्थियों की कक्षागत संबंधों पर अध्ययन करके यह पाया कि जो शिक्षक दुर्भाषा का उपयोग करते हैं उनकी कक्षा का बहिष्कार ज्यादा हुआ। हान्गलिंग (2011) द्वारा युवकों के भारी अनुपात में मुख्य रूप से कन्याओं के आक्रामकता के निम्न स्तर का प्रदर्शन किया है। क्रिस्टिना एम. वार्नर (2013) द्वारा बच्चों और किशोरों में विघटनकारी व्यवहार है। माजदे एम. ए. (2009–2010) के अध्ययन में लिंगों के मध्य अंतर ज्ञात करने हेतु किया गया, आक्रामकता प्रतिबल, सामाजिक कौशल व सामाजिक चिंता व उनके मध्य सहसंबंध पाया गया।

उद्देश्य

1. सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों के (कक्षा दसवीं) के विद्यार्थियों की आक्रामक व्यवहार में तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों के छात्रों के आक्रामक व्यवहार में तुल. नात्मक अध्ययन करना।
3. सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों के छात्राओं के आक्रामक व्यवहार में तुल. नात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना

H_1 : सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के मध्य आक्रामक व्यवहार में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

H_2 : सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्रों के मध्य आक्रामक व्यवहार में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

H_3 : सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राओं के मध्य आक्रामक व्यवहार में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

प्रतिदर्श

दुर्ग शहर के 23 विद्यालयों में से 05 सरकारी व 05 गैर सरकारी विद्यालयों का चयन किया गया। इनमें से प्रतिदर्श चयन उद्देश्यपूर्ण प्रतिदर्श के रूप में किया गया। उपर्युक्त 10 विद्यालयों में से प्रत्येक सरकारी विद्यालय के 50 छात्र व 50 छात्राओं एवं प्रत्येक गैर सरकारी विद्यालय के 50 छात्र व 50 छात्राओं का चयन किया गया अर्थात् कुल 200 विद्यार्थियों की आक्रामक व्यवहार का अध्ययन किया गया है।

उपकरण

प्रस्तुत शोध में आक्रामक व्यवहार के मापन हेतु डॉ. जी.पी. माथुर एवं डॉ. राज. कुमारी भटनागर द्वारा निर्मित व प्रमाणित (आक्रामक मापनी) उपकरण का उपयोग किया गया है।

सांख्यिकीय विश्लेषण

शून्य परिकल्पना से प्राप्त प्रदत्तों का विश्लेषण मध्यमान एवं विचलन तथा सार्थकता ज्ञात करने के हेतु टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया।

परिकल्पना परिणाम व विवचेना

परिकल्पना H_1

सरकारी व गैरसरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों (कक्षा दसवीं) के मध्य आक्रामक व्यवहार में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

सारणी क्रमांक – 1

क्र.	तुलनात्मक समूह	प्रदत्तों की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी मूल्य
1	सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों में	100	202.14	3.58	2.19
2	गैरसरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों में	100	208.05	26.69	
df = 198 P< 0.05 स्तर पर सार्थक है।					

उपर्युक्त सारणी कमांक 1 का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के आक्रामक व्यवहार के मध्य टी मूल्य 2.19 प्राप्त हुआ जो स्वतंत्रता की कोटि 198 के लिए 0.05 स्तर पर ज्यादा है। दोनों के मध्य सार्थक अंतर है। अतः परिकल्पना H_1 अस्वीकृत होती है।

परिकल्पना H_2

सरकारी व गैरसरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत् (कक्षा दसवीं के) छात्रों के मध्य आक्रामक व्यवहार में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

सारणी कमांक – 2

क्र	तुलनात्मक समूह	प्रदत्तों की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी मूल्य
1	सरकारी विद्यालयों के छात्रों में	50	215.4	46.74	1.09
2	गैरसरकारी विद्यालयों के छात्रों में	50	204.36	51.40	
df = 98 P> 0.05 स्तर पर सार्थक नही है।					

उपर्युक्त सारणी कमांक 2 का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के छात्रों के आक्रामक व्यवहार के मध्य टी मूल्य 1.09 प्राप्त हुआ जो स्वतंत्रता की कोटि 98 के लिए 0.05 स्तर से कम है। दोनों के मध्य सा. र्थक अंतर नहीं पाया जा रहा है। अतः परिकल्पना H_2 स्वीकृत होती है।

Volume : 5 | Issue : 9 | September 2015 | ISSN - 2249-555X

परिकल्पना H_3
सरकारी व गैरसरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत् (कक्षा दसवीं के) छात्राओं के मध्य आक्रामक व्यवहार में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

सारणी कमांक – 3

क्र	तुलनात्मक समूह	प्रदत्तों की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी मूल्य
1	सरकारी विद्यालयों के छात्राओं में	50	188.88	33.75	3.44
2	गैरसरकारी विद्यालयों के छात्राओं में	50	211.74	33.03	
df = 98 P< 0.05 स्तर पर सार्थक है।					

उपर्युक्त सारणी कमांक 3 का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के छात्रों के आक्रामक व्यवहार के मध्य टी मूल्य 3.44 प्राप्त हुआ जो स्वतंत्रता की कोटि 98 के लिए 0.05 स्तर से अधिक है। दोनों के मध्य सार्थक अंतर है। अतः परिकल्पना H_3 अस्वीकृत होती है।

निष्कर्ष
सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों एवं छात्राओं के मध्य आक्रामक व्यवहार में सार्थक अंतर पाया गया। इसका कारण यह हो सकता है कि किशोरावस्था का समय व्यवहार में परिवर्तन का समय है जो प्रत्येक बालक–बालिकाओं में होता है जिसमें आक्रामक व्यवहार लगभग एक समान होता है। उसके परिपेक्ष्य में यह अन्तर है।

सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों के छात्रों के आक्रामक व्यवहार में सार्थक अंतर नहीं पाया जा रहा है क्योंकि विद्यालय, घर एवं आसपास के वातावरण का प्रभाव पड़ता है। उसके परिपेक्ष्य में छात्राओं के व्यवहार में सार्थक अंतर नहीं पाया गया है।

सुझाव
1. माता–पिता का व्यवहार अपने बच्चों के साथ मैत्रीपूर्ण होना चाहिए।
2. प्राध्यापक द्वारा किशोरों की आवश्यकता के अनुरूप एवं उनकी प्रवृत्ति के अनुसार शिक्षण पद्धति अपनाएँ।
3. स्वावलंबन की भावना का विकास करना।
4. किशोरों के चरित्र को आदर्श रूप प्रदान करना।
5. माता–पिता एवं शिक्षक को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि उनका बालक ऐसे समूह का सदस्य न बन जाये जिसके सिद्धांत एवं आदर्श बालक को अनुचित आदतें डालने में उपयोगी सिद्ध हो।

अनुकरणीय अध्ययन
1. कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं के आक्रामक व्यवहार का अध्ययन।
2. विशिष्ट बालक एवं सामान्य बालक के आक्रामक व्यवहार के प्रभाव का अध्ययन।
3. बालक श्रमिकों के आक्रामक व्यवहार एवं उनकी समायोजन क्षमता के मध्य संबंध पर एक अध्ययन।
4. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के किशोरों की आक्रामक व्यवहार पर अध्ययन।
5. पारिवारिक वातावरण एवं विद्यालयीन वातावरण का विद्यार्थियों के आक्रामक व्यवहार पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।

REFERENCE
• आस्थाना बिपिन, श्रीवास्तव विजया, आस्थाना निधि (2012–13), शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी प्रकाशन : अग्रवाल पब्लिकेशन हेडऑफिस 28/115, ज्योति ब्लॉक, संजय प्लेस, आगरा–2, पृष्ठ क्र. – 185,186 • कपिल के एच. (2014–15), सांख्यिकी के मूल तत्व प्रकाशन : अग्रवाल पब्लिकेशन ज्योति ब्लॉक संजय प्लेस आगरा – 2, पृष्ठ क्र. 85, 541 • माथुर एम.एस. (2009), शिक्षा मनोविज्ञान, प्रकाशन : विनोद पुस्तक मंदिर आगरा–2 • पाठक पी.डी. (2012), शिक्षा मनोविज्ञान प्रकाशन : अग्रवाल पब्लिकेशन हेडऑफिस 28/115, ज्योति ब्लॉक, संजय प्लेस, आगरा–2, पृष्ठ क्र. – 137, 138 • पचौरी गिरीश (2008), शिक्षा मनोविज्ञान आधार प्रकाशक : विनय रखेजा C/o आर लाल बुड डिपो निकट गर्वनमेंट कॉलेज, मेरठ, 25001, पृष्ठ कमांक 65–83, 116–124, 239–243 • पाण्डेय रामशकल (2013), शिक्षा मनोविज्ञान प्रकाशक : विनय रखेजा C/o आर. लाल बुक डिपो (ANISO-900/-2008) निकट गर्वनमेंट कॉलेज, बेगम ब्रिज रोड, मेरठ–250001, पृष्ठ कमांक 140–142 • पाण्डेय रामशकल (2013), शिक्षा मनोविज्ञान प्रकाशक : विनय रखेजा C/o आर. लाल बुक डिपो (ANISO-900/-2008) निकट गर्वनमेंट कॉलेज, बेगम ब्रिज रोड, मेरठ–250001, पृष्ठ कमांक 140–142 • राय पारसनाथ (2007), अनुसंधान परिचय प्रकाशक : लक्ष्मीनारायण अग्रवाल पुस्तक प्रकाशक एवं विक्रेता अनुपम प्लाजा–1 ब्लॉक नं. 50 संजय प्लेस, आगरा, पृष्ठ कमांक 18–22, 40, 62, 66 • सक्सेना सरोज (2007), शिक्षा के दार्शनिक एवं समाज शास्त्रीय आधार प्रकाशक : साहित्य प्रकाशन, आगरा, पृष्ठ कमांक 1–4 • सरीन, शशिकला एण्ड सरीन, अंजनी (2012), शैक्षिक अनुसंधान विधियॉ प्रकाशक : अग्रवाल पब्लिकेशन, पृष्ठ कमांक 359 • सिंह, अरूण कुमार (1998), शिक्षा के सामाजिक मनोविज्ञान पृष्ठ कमांक 707–731 • शर्मा, आर.ए. (2008), शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रकिया प्रकाशक : विनय रखेजा C/o आर. लाल बुक डिपो (ANISO-900/2008 company) निकट गर्वनमेंट कॉलेज, बेगम ब्रिज रोड, मेरठ–2005/पृष्ठ कमांक 198, 460–462, 472, 478, 663 • शुक्ल ओ. पी. (2006), शिक्षा मनोविज्ञान प्रकाशकः भारत बुक डिपो 17 अशोक मार्ग लखनऊ, पृष्ठ क्रमांक –199,200 • शर्मा आर.के (नवीन संस्करण), शिक्षा के समाजशास्त्रीय एवं दार्शनिकीय आधार प्रकाशकः राधा प्रकाशन मंदिर सेक्टर–8 निकट केन्द्रीय कारागार परशुरापुरी, नगला अजीता, आगरा, पृष्ठ कमांक–4–6 • वैज्ञानिक और अनुसांधन प्रकाशन का अंतराष्ट्रीय जर्नल, खण्ड 3, अंक फरवरी 2013 • एशियाई सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में, अग्रिम (ASSO) वॉल्यूम 13 नवंबर 1 2012 • Sixth survey of Educational Research 1993-200] Volume II] Pg. No. 306] NCERT • शर्मा, आर. ए. (2013) शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया, प्रकाशकः विनय रखेजा C/o लाल बुक डिपो, मेरठ, पृष्ठ कमांक – 508, 600, 748, 754
1- Web.- www.wikipedia.org | www.google.suitelol.com | www.vikipedia.com | www.educationidere.com | www.sodhganga.com |